पाठ - 4
इस्लाम में इबादत की हक़ीक़त

الدرس الرابع - هندي
أحكام الصلاة و آدابها

इस्लाम म इबादत उसी सूरत म स्वाकार याग्य हाती ह जबकि वह पूरी तरह नेक नीयती से अल्लाह के लिए हो और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताए हुए तरीक़े के अनुसार हो। मिसाल के तौर पर नमाज़ एक ऐसी इबादत है जिसे अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए अंजाम नहीं दिया जा सकता और उसे उसी तरह अदा किया जाए जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान किया है। इसके कुछ असबाब हैं

अ: अल्लाह ने खास अपनी ही इबादत का हुक्म दिया है अतएव उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत शिर्क होगा अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी दूसरे को साझी न ठहराओ,

ब: अल्लाह ने क़ानून बनाने का हक़ अपने साथ ख़ास किया है अतएव यह केवल उसी का हक़ है। अब यदि कोई अल्लाह के निर्धारित क़ानून के अलावा और क़ानून पर अमल करता है तो मानो वह इन्सान अल्लाह के उस हक़ में दूसरे को शरीक करता है।

स: अल्लाह ने हमारे लिए अपने दीन को मुकम्मल कर दिया है। अब यदि कोई व्यक्ति अपने पास से कोई नयी इबादत ईजाद करता है तो मानो वह दीन के अधूरा होने की बात करता है।

इस्लाम के अर्कान इस्लाम के पांच अर्कान हैं, 1. अल्लाह के एक होने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की गवाही देना। 2. नमाज़ काएम करना,3. ज़कात अदा करना, 4. रमज़ान के रोज़े रखना, 5. ख़ानए काबा का हज करना,

हम से इस्लाम क्या चाहता है?

इस्लाम मुसलमानों से यह नहीं चाहता कि वह दुनिया से पूरी तरह कट कर रह जाएं और पूरी तरह से अपना संबंध खत्म कर लें, न यह चाहता है कि वे मस्जिदों ही में रहें और उससे बाहर न निकलें और न ही इस्लाम की यह मन्शा है कि इन्सान किसी खोह में जाकर रहने लगे और वहीं अपना पूरा जीवन गुज़ार दे बल्कि इस्लाम तो चाहता है कि मुसलमान समाज व उसके सारे तक़ाजों के मामले में हिस्सा ले और सभ्य व प्रगति करने वाली क़ौमों का पेशवा बन कर रहें माल के मामले में सबसे मालदार बनें और इल्म के मैदान में सबसे आगे हों।

इन्सानी आमाल में कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो सर्वथा आदर सम्मान के मामले पर दलालत करती हैं जैसे दुआ नमाज़ रुकूअ सजदा नज़र व नियाज़, जबह, तसबीह व तहलील। यही वजह है कि एक मोमिन इन चीज़ों को केवल एक अल्लाह ही के लिए अंजाम देता है वह अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए नमाज़ नहीं पढ़ता, अल्लाह ही के लिए रुकूअ व सजदे करता है और अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए सुबहा–न–क अर्थात तेरी ज़ात पाक है नहीं कहता है और अल्लाह ही से गुनाहों की माफी की दरख्वास्त करता है क्योंकि ये सारी चीज़ें सर्वथा आदर सम्मान के मज़ाहिर हैं जो इबादत का मग्ज़ है।

इस्लाम पिछले तमाम गुनाहों को माफ कर देता है

अल्लाह की बहुत बड़ी कृपा व उसका एहसान है कि उसने इस्लाम को पिछले तमाम गुनाहों को माफ करने वाला बनाया अतः एक काफिर इन्सान जब इस्लाम स्वीकार करता है तो उसने कुफ्र के दौरान जो कुछ किया होता है अल्लाह सभी को माफ कर देता है और वह गुनाहों से पाक साफ हो जाता है।

जिस आदमी को अल्लाह ने हराम माल कमाने के बाद इस्लाम का सौभाग्य प्रदान किया हो उसके लिए वह माल भी हलाल हो जाता है उसे इस्तेमाल करने, अपने पास रखने, उससे सदक़ा करने और उसे शादी में इस्तेमाल करने में उसे गुनाह नहीं मिलेगा क्योंकि अल्लाह ने कुरआन मजीद में इर्शाद फरमाया है: पिछले जितने गुनाह हैं वे तमाम माफ कर दिए गऐ हैं। (सूरह अन्फाल– 38)

इस्लाम में कैसे दाखिल हों?

जब आपने दीन इस्लाम की महानता को जान लिया और आपको यह मालूम हो गया कि अल्लाह के यहां नजात का यह अकेला रास्ता है और इसमें दाखिल होना सभी लोगों के लिए जरूरी है और उसको अपनाए बिना कियामत के दिन जन्नत में दाखिले और जहन्नम से नजात पाने का दूसरा कोई रास्ता नहीं होगा तो आप सवाल कर सकते हैं कि इस्लाम में दखिल होने का तरीक़ क्या है इसका जवाब यह है कि जब आप इस्लाम स्वीकार करना चाहते हैं तो आप कलिमा षहादत की गवाही दें अर्थात इस बात को सच्चे दिल से मानें कि अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक उपास्य नहीं और मुहम्मदुर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं कलिमा शहादत इला इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह को जबान से अदा करें, इसके बाद इस्लामी षिष्टाचार सीखें और उनको अंजाम दें जैसे आप नमाज़ कायम करें आदि इस्लामी किताब घरों व मर्कज़ों में इस ताल्लुक से लिखी गयी किताबें बहुत अधिक हैं